आरती श्रीहनुमंताची ५६

जय देव जय देव जय जय हनुमंता। विघ्नें दुर्धर पळती तव नाम घेतां।।ध्रु.।। रुद्र अकरावा तूं अससी बलभीमा। अंगीकार करिसी दास्यत्व रामा। उपजत ब्रह्मचारी नेणिस त्या रामा। पुरुषार्थाचे बळें जिंकियलें कामा।।१।। विशाळ रूप त्याविर चंदनाची ऊटी। दिसते शोभा स्वामी पुच्छाची मोठी। सव्य हस्त उभारी डावा कर कटीं। चरणी रगिडिस राक्षस धिर बाबरजोटी।।२।। बळ तें वर्णू न शके तव मारुतिराया। वज्रदेही अससी अमराची काया। पडतां संकट् स्मरता धाविस लवलाह्या। म्हणुनी माणिकदस लागतसे पाया।।३।।